विषय-क्रम

प्राक्कथन	8
भूमिका	11
प्रकाशकीय	14
मन की बात	15
अध्याय – एक	
मैंने हिन्दू धर्म क्यों छोड़ा ?	17
अध्याय – दो	
कुछ घटनाएँ, जो हिन्दू धर्म के प्रति घृणा का कारण बनीं	24
अध्याय – तीन	
हिन्दू धर्म कुत्तों के समान है	38
अध्याय – चार	
हिन्दू का अर्थ	43
अध्याय – पाँच	
जीवन के कुछ खट्टे-मीठे अनुभव	48
अध्याय – छः	
कुछ और स्मृतियाँ	110
अध्याय – सात	
हिन्दुओं के अमानवीय कृत्य	122
अध्याय – आठ	
विकट समस्याएँ और निदान	131

1. "सत्य को सत्य और असत्य को असत्य के रूप में जानो।" —बुद्ध

2. **"क्षणं प्रज्ज्वलितं श्रेयं, नच धूमायते चिरं"**
अर्थात् धूँआ देते हुए चिरकाल तक सुलगते रहने की अपेक्षा क्षणमात्र के लिए प्रज्ज्वलित होना श्रेयस्कर है।

3. "जो तर्क नहीं करेगा, वह धर्मान्ध है,
जो तर्क नहीं कर सकता, वह मूर्ख है,
जो तर्क करने का साहस नहीं करता, वह दास है। —एच. ड्रुमंड

4. "बाहर से धर्म का ढोंग, सदाचार का अभिनय, ज्ञान-विज्ञान का तमाशा किया जाता है और भीतर से यह जघन्य, कुत्सित कर्म ! धिक्कार है ऐसे समाज को !! सर्वनाश हो ऐसे समाज का !!!
(राहुल सांकृत्यायन, तुम्हारी क्षय, पृ. 6, 1971)

5. "जिस समाज में प्रतिभाओं को जीते–जी दफनाना अपना कर्त्तव्य समझा है और गदहों के सामने अंगूर बिखरने में जिसे आनन्द आता है, क्या ऐसे समाज के अस्तित्व को हमें पल भर भी बर्दाश्त करना चाहिए ?"
(राहुल सांकृत्यायन, तुम्हारी क्षय, पृ. 7, 1971)

6. "मुझे ख्याल आता था—ऐसे समाज को जीने देना पाप है। इस पाखण्डी, धूर्त, बेईमान, जालिम, नृशंस समाज को पेट्रोल डालकर जला देना चाहिए।"
(राहुल सांकृत्यायन, तुम्हारी क्षय, पृ. 9, 1971)

7. हमारा कल्याण तो इसी में है कि हम चातुर्वर्ण्य के नाम तक को, चाहे कर्म से हो या जन्म से, मटियामेट कर दें, जिसमें फिर कभी अंकुरित न होने पावे।"
(रजनीकांत शास्त्री, हिन्दू जाति का उत्थान और पतन, पृ. 290, 1976)

8. "हिन्दू धर्म का तत्वज्ञान ऐसी असमानता और ऐसे अन्यायपूर्ण सिद्धान्तों पर आधारित है कि इस धर्म में किसी को कोई उत्साह आज तक नहीं मिला।"
(बाबा साहेब डॉ. बी.आर.अम्बेडकर, नागपुर, 1956)

9. "हिन्दू नाम हमें मुसलमानों ने दिया है, जिसका अर्थ काला, काफिर, चोर इत्यादि है।"
(महर्षि दयानन्द, उपदेश मंजरी, धर्माधर्म विषय, पृ. 20, पूना)